उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,प्रयागराज

भारत रत्न बोधिसत्व डॉ० भीमराव अम्बेडकर जी 134 वीं जयन्ती की पूर्व सन्ध्या पर

व्याख्यान शीर्षक– भारतीय संविधान पर विमर्श

आयोजन तिथि– 13 अपैल, 2025

कार्यक्रम प्रतिवेदन

आयोजक–समाज विज्ञान विद्याशाखा

कार्यक्रम प्रतिवेदन

भारत रत्न बोधिसत्व डॉ० भीमराव अम्बेडकर जी 134 वीं जयन्ती की पूर्व सन्ध्या दिनांक 13 अपैल, 2025 को समाज विज्ञान विद्याशाखा के तत्वाधान में एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार शीर्षत्र'' **भारतीय संविधान पर विमर्श**' का आयोजन किया गया। व्याख्यान के मुख्य वक्ता श्री मुकेश मिश्रा (से. नि.) न्यायाधीश एवं पूर्व सदस्य उ०प्र० लोक सेवा आयोग, प्रयागराज थे। मुख्य वक्ता का स्वागत एवं अतिथि परिचय प्रो० सन्तोषा कुमार निदेशक, समाज विज्ञान विद्याशाखा ने किया ।

मुख्य वक्ता ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि डॉ0 अबेडकर जी एक समाज सुधारक, संविधान शिल्पी, कुशल, प्रखर वक्ता, तथा कुशल राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान में समाज के प्रत्येक वर्ग के अधिकार तथा कर्तव्य का प्रावधान है। वास्तव में भारतीय संविधान भारत की जनमानस की मुखर अभिव्यक्ति है।

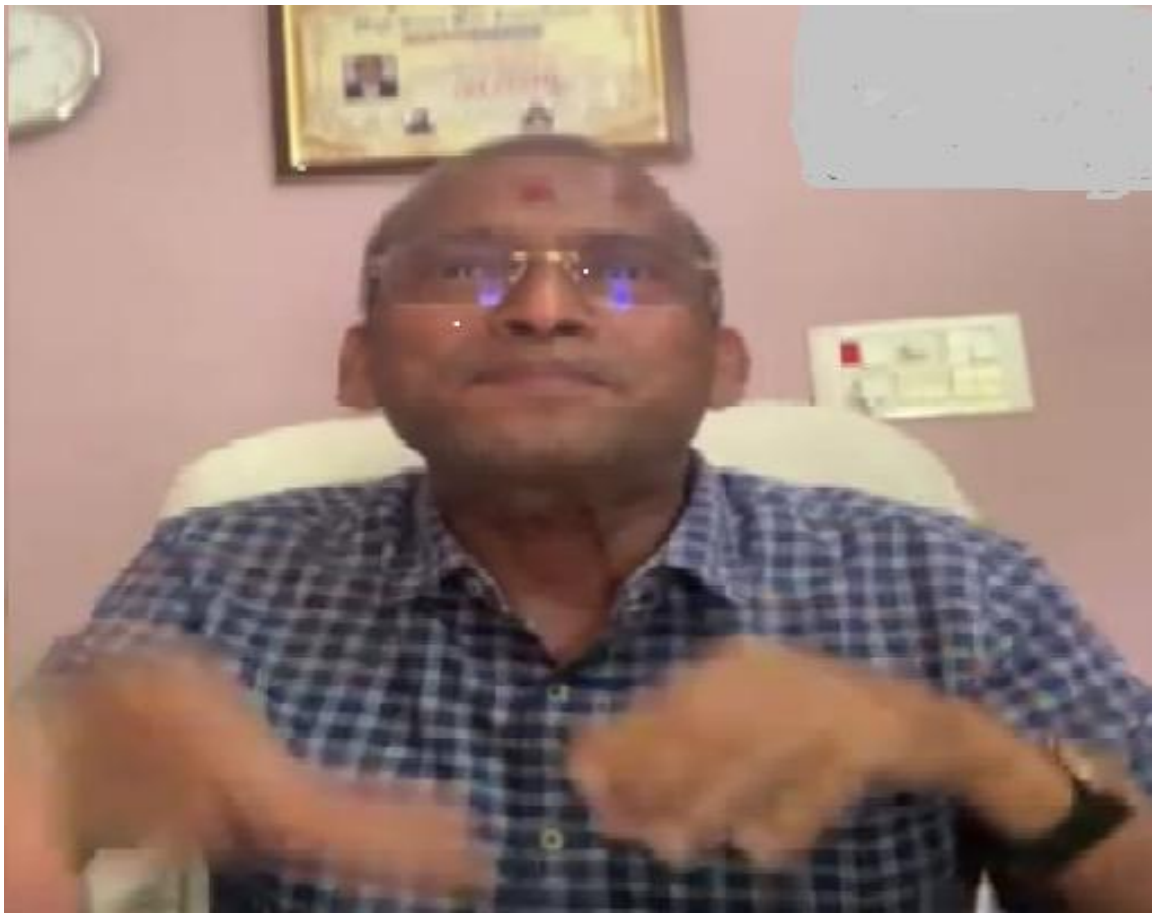

मुख्य वक्ता श्री मुकेश मिश्रा (से. नि.) न्यायाधीश एवं पूर्व सदस्य उ०प्र० लोक सेवा आयोग, प्रयागराज

उन्होंने डॉ0 अम्बेडकर जी द्वारा किये गये विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि संविधान प्रारुप समिति के अध्यक्ष होने के कारण उन्होने विभिन्न समिति के सदस्यों का इस विषय पर सुझाव एवं विचार को अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक सुना तथा सम्यक विचार–विमर्श भी किया। उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान भारत के सभी नागरिको को समान अधिकार प्रदान करता है। संविधान की दृष्टिकोण में सभी समान है। सभी व्यक्ति को संविधान में निहित लोकतान्त्रिक मूल्यों का सम्मान तथा पालन करना चाहिए। तब तभी सच्चे अर्थो में भारतीय संविधान के प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त किया जा सकता है। भारतीय संविधान पर विमर्श यह एक वृहद तथा व्यापक विषय है। जिस पर जितना विमर्श किया जाय कम है । अन्त में उन्होने कहा कि भारतीय संविधान सच्चे अर्थो में लोकतान्त्रिक मूल्यों एवं प्रक्रियाओं को मजबूत करने का सबसे सशक्त तथा प्रबल माध्यम है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के मा. कुलपति आचार्य सत्यकाम जी ने कहा कि भारतीय संविधान के निर्माता डॉ० भीमराव अम्बेडकर जी एक महान तथा विशाल व्यक्तित्व के धनी थे। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व कालजई है। उन्होंने डॉ0 अम्बडेकर जी द्वारा किये गये विभिन्न सत्प्रयासों का उल्लेख किया।

मा. कुलपति जी ने भारतीय संविधान में निहित नीति–निर्देशक तत्वो, मौलिक अधिकरो तथा मूल कर्तव्यो का उन्लेख करते हुए कहा कि ये सभी व्यक्ति या नागरिक को अपने कर्तत्वो के प्रति ईमानदारी तथा निष्ठा से कार्य करने के लिए प्रेरित करते है। भारतीय संविधान का निर्माण अथक प्रयासो तथा विचार–विमर्श के उपरान्त निर्मित एक दस्तावेज है जो हम सभी को लोकतान्तिक मूल्यो तथा सिद्धान्तो के अनुसार चलने की प्रेरणा प्रदान करती है।

अध्यक्षीय उदबोधन मा. कुलपति जी

मा. कुलपति जी कहा कि डॉ0 अम्बडेकर आधुनिक राष्ट्र निर्माण के प्रबल तथा सशक्त समर्थक थे। उन्होंने कहा कि उन्होंने समाज मे व्याप्त विभिन्न कुरीतियों तथा बुराइयों का विरोध किया और सर्वस्पर्शी समाज के निर्माण के का प्रबल समर्थन किया। अन्त में मा. कुलपति जी ने कहा कि डॉ0 अम्बेडकर के सिद्धांतों एवं मूल्यों का अनुसरण करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धा तथा आस्था होगी। निश्चित रूप से डॉ0 अम्बेडकर एक महान समाज सुधारक थे ।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए प्रो. संजय कुमार सिंह, आचार्य, भूगोल, समाज विज्ञान विद्या शाखा

कार्यक्रम का संचालन डॉ0 सुनील कुमार, सहायक आचार्य, समाज विज्ञान विद्याशाखा

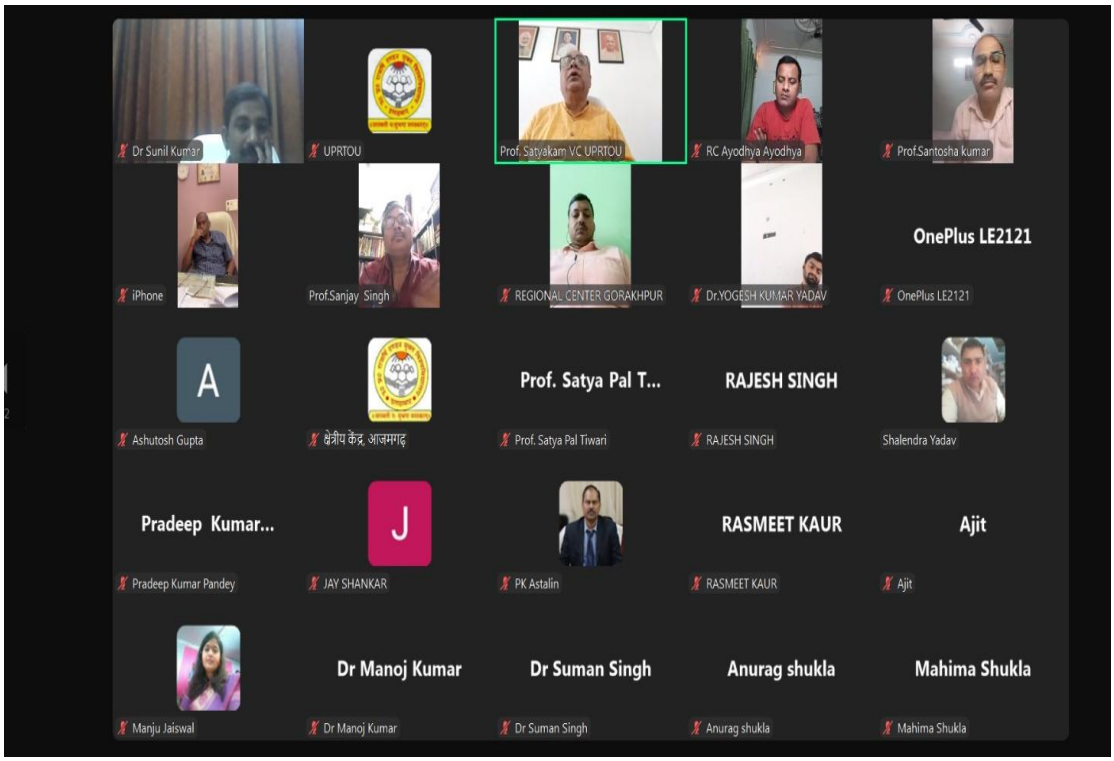

कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हुए निदेशकगण, आचार्यगण सह–आचार्यगण, सहायक आचार्य गण एवं अन्य प्रतिभागीगण

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विभिन्न विद्याशाखाओ के निदेशकगण, आचार्यगण सह–आचार्यगण, सहायक आचार्य गण, विभिन्न क्षेत्रीय केन्दों के अलावा कर्मचारीगण के साथ ही शिक्षार्थी एवं शोध छात्र कार्यक्रम में जुड़े रहे।